ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026

RAAVI

An International Journal of Multidisciplinary Research

AI के युग में साहित्यकार की भूमिका

डॉ. अमर बन्सीलाल वाघमोडे

विश्वासराव रणसिंग महाविद्यालय,

कळंब-वालचंदनगर, तहसील : इंदापूर, जि. पुणे

सारांश

इक्कीसवीं सदी को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) का युग कहा जा रहा है। शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, मीडिया तथा संचार के साथ-साथ साहित्य भी इस तकनीकी परिवर्तन से प्रभावित हुआ है। वर्तमान समय में AI कविता, कहानी, निबंध, अनुवाद और आलोचना तक लिखने में सक्षम हो चुका है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि AI के विकसित युग में साहित्यकार की भूमिका क्या होगी। प्रस्तुत शोधालेख में साहित्यकार की पारंपरिक भूमिका, AI की क्षमताओं एवं सीमाओं तथा भविष्य में साहित्यकार की बदलती जिम्मेदारियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि AI भाषा-आधारित संरचनाओं का निर्माण कर सकता है, किंतु उसमें मानवीय अनुभूति, संवेदना और नैतिक चेतना का अभाव है। अतः AI के युग में साहित्यकार की भूमिका समाप्त न होकर और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है–वह मानवीय मूल्यों का संरक्षक, सांस्कृतिक अस्मिता का रक्षक तथा नैतिक दिशा-निर्देशक बनकर उभरता है।

बीज शब्द : कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साहित्यकार, संवेदना, नैतिकता, संस्कृति, सृजनात्मकता, आलोचना, भाषा संरक्षण

प्रस्तावना

साहित्य मानव जीवन की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। यह केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि अनुभव, संघर्ष, प्रेम, करुणा, सुख दुःख और सामाजिक यथार्थ की कलात्मक प्रस्तुति है। आ. रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को मानव-हृदय की अभिव्यक्ति माना है, जबकि मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य को "जीवन की आलोचना" कहा है। किन्तु इस तकनीकी प्रगति के साथ एक मौलिक प्रश्न भी उभरता है–क्या AI साहित्य की आत्मा को

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com

Email: raavipublications@gmail.com

WhatsApp: 9665841996

ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026
RAAVI
An International Journal of Multidisciplinary Research

स्पर्श कर सकता है? क्या वह अनुभूति की उस गहराई तक पहुँच सकता है, जहाँ से सच्ची रचना जन्म लेती है? AI के पास अनुभव नहीं, बल्कि अनुभवों का संकलित डेटा है; उसके पास संवेदना नहीं, बल्कि संवेदनाओं का सांख्यिकीय विश्लेषण है। वह शैली की नकल कर सकता है, परंतु जीवन के संघर्ष को जी नहीं सकता।

AI के आगमन ने सृजनात्मकता के क्षेत्र में नई संभावनाएँ और चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। आज AI भाषा का विश्लेषण कर सकता है, शैली की नकल कर सकता है और बड़ी मात्रा में सामग्री तैयार कर सकता है। किंतु क्या वह साहित्य की आत्मा को स्पर्श कर सकता है? साहित्य मानव समाज का दर्पण माना जाता है। यह मानव की संवेदनाओं, अनुभूतियों और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक साहित्यकार समाज का पथप्रदर्शक रहा है। किंतु इक्कीसवीं सदी में AI के आगमन ने सृजनात्मकता के क्षेत्र में एक नई चुनौती प्रस्तुत की है।AI आधारित तकनीकें अब भाषा का विश्लेषण, लेखन और संपादन करने में सक्षम हो चुकी हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि क्या AI साहित्यकार का स्थान ले सकता है? या साहित्यकार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी?

AI आज मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) के माध्यम से साहित्यिक रचनाएँ तैयार कर सकता है। यह डेटा के आधार पर कविता, कहानी, लेख और अनुवाद प्रस्तुत करता है। किन्तु AI का लेखन अनुभवजन्य नहीं होता, बल्कि यह पूर्व उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण पर आधारित होता है। उसमें मानवीय संवेदना, आत्मानुभूति और जीवन-संघर्ष का वास्तविक अनुभव नहीं होता।AI के युग में साहित्यकार की जगह AI नहीं ले सकता क्योंकि साहित्यकार की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संवेदनशीलता है। AI शब्दों को जोड़ सकता है, लेकिन वह मानवीय पीड़ा, प्रेम, सुख- दुःख,करुणा, दया और संघर्ष की वास्तविक अनुभूति नहीं कर सकता। इसलिए साहित्यकार मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं का संरक्षक बना रहेगा।इस संदर्भ में नामवर सिंह का यह वाक्य दृष्टव्य हैं, "अनुभूति की प्रामाणिकता ही रचना को स्थायित्व प्रदान करती है।" 1 मतलब AI के लेखन में 'अनुभूति' उधार ली हुई होती है — डेटा आधारित। साहित्यकार का दायित्व है कि वह मौलिक अनुभूति को सुरक्षित रखे और साहित्य को स्थायित्व प्रदान करे। AI की 'उधार ली हुई अनुभूति' और साहित्यकार की 'जीवित अनुभूति' में मूलभूत अंतर है। साहित्यकार का दायित्व है कि वह इस अंतर को बनाए रखे, अपनी रचनात्मक स्वतंत्रता और संवेदनात्मक प्रामाणिकता को सुरक्षित रखे तथा साहित्य को स्थायित्व प्रदान करे। यही उसकी विशिष्टता और अनिवार्यता है।

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com
Email: raavipublications@gmail.com
WhatsApp: 9665841996

ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026
RAAVI
An International Journal of Multidisciplinary Research

इस युग में साहित्यकार को नैतिक मार्गदर्शक बनकर रहना होगा। क्योंकि AI के माध्यम से लिखी गई सामग्री में मौलिकता और नैतिकता का प्रश्न उठता है। साहित्यकार का दायित्व होगा कि वह साहित्य में सत्य, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को बनाए रखे। इसलिए रामचंद्र शुक्ल जी ने कहा है कि, " "साहित्य समाज का दर्पण नहीं, अपितु समाज की चेतना का संचित प्रतिबिंब है।" 2 यह कथन स्पष्ट करता है कि साहित्य केवल यांत्रिक प्रतिबिंब नहीं है। AI डेटा के आधार पर लेखन कर सकता है, परंतु 'चेतना' का संचित अनुभव केवल मानव साहित्यकार के पास होता है।यह स्पष्ट है कि साहित्य यांत्रिक प्रतिबिंब नहीं, बल्कि चेतन सृजन है। AI लेखन की प्रक्रिया को सरल बना सकता है, परंतु 'संचित चेतना' का स्थान नहीं ले सकता। मानव साहित्यकार की विशिष्टता इसी में है कि वह अनुभवों को अर्थ देता है, घटनाओं को मूल्य से जोड़ता है और समाज को आत्मबोध कराता है।

इसलिए AI के युग में भी साहित्यकार की भूमिका अपरिहार्य है, क्योंकि साहित्य की वास्तविक शक्ति सूचना में नहीं, बल्कि चेतना में निहित है।

AI एक उपकरण है, सृजनकर्ता नहीं।साहित्यकार AI का उपयोग सहायक के रूप में कर सकता है– जैसे शोध, संपादन, अनुवाद या संदर्भ खोजने में। किंतु मूल सृजनात्मक दृष्टि साहित्यकार की ही होगी। AI-जनित सामग्री में मौलिकता और बौद्धिक संपदा का प्रश्न उठता है। साहित्यकार कोयह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीक का उपयोग नैतिक सीमाओं के भीतर हो। नामवर सिंह का कहना हैं कि, "रचना और युग का संबंध संवाद का है, अनुकरण का नहीं।" 3 इस प्रकार AI प्रायः अनुकरण करता है। साहित्यकार का कार्य युग से संवाद स्थापित करना है — प्रश्न उठाना, प्रतिरोध करना और मूल्य गढ़ना हैं। AI का लेखन पूर्व-निर्धारित डेटा और निर्देशों की सीमा में बंधा होता है। वह जोखिम नहीं लेता, क्योंकि उसके पास न तो व्यक्तिगत दायित्व है और न ही सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना। साहित्यकार, इसके विपरीत, अपने नाम, विचार और दृष्टि के साथ समाज के सामने उपस्थित होता है। वह आलोचना का सामना करता है, परंतु अपनी वैचारिक स्वतंत्रता बनाए रखता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि AI अनुकरण कर सकता है, परंतु संवाद नहीं कर सकता; वह संरचना दे सकता है, परंतु प्रतिरोध की चिंगारी नहीं जगा सकता। साहित्यकार का वास्तविक कार्य अपने युग से प्रश्न करना, असमानताओं को उजागर करना और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करना है।

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com
Email: raavipublications@gmail.com
WhatsApp: 9665841996

ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026
RAAVI
An International Journal of Multidisciplinary Research

साहित्यकार को वर्तमान समय में आलोचनात्मक विवेक का विकास करना होगा। क्योंकि AI द्वारा उत्पन्न साहित्य की समीक्षा और मूल्यांकन की आवश्यकता बढ़ेगी। साहित्यकार और आलोचक का कार्य होगा कि वे AI-जनित साहित्य और मानवीय साहित्य के अंतर को स्पष्ट करें। इस बारे में रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि, "साहित्य का संबंध मनुष्य के हृदय से है, केवल बुद्धि से नहीं।" 4 मतलब AI की कार्यप्रणाली मुख्यतः तार्किक होती है। उसमें 'हृदयगत संवेदना' का अभाव है। इसलिए साहित्यकार की भूमिका भावनात्मक प्रामाणिकता को बनाए रखने में निर्णायक रहेगी। इसलिए साहित्यकार को इस संदर्भ में सजग रहना होगा। साहित्यकार को भाषा और संस्कृति के संरक्षण में भी निर्णायक भूमिका निभानी पड़ेगी। हिंदी जैसी समृद्ध भाषा के संरक्षण में साहित्यकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। AI वैश्विक डेटा पर आधारित होता है, जिससे स्थानीय भाषाई और सांस्कृतिक विशिष्टता प्रभावित हो सकती है। साहित्यकार को अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा करनी होगी। उन्हें हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी योगदान देने की आवश्यकता होगी। AI का निर्माण और प्रशिक्षण मुख्यतः वैश्विक डेटा पर आधारित होता है, जिसमें अंग्रेज़ी और अन्य प्रभावशाली भाषाओं की सामग्री का अनुपात अधिक होता है। परिणामस्वरूप, हिंदी जैसी भाषाओं की स्थानीय बोलियाँ, लोक-शब्दावली, क्षेत्रीय अभिव्यक्तियाँ और सांस्कृतिक संकेत अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व पाते हैं। इससे भाषा का एक प्रकार का मानकीकरण होने लगता है, जो उसकी विविधता को सीमित कर सकता है।उदाहरणतः–हिंदी में 'गंगा-जमुनी तहज़ीब, 'अतिथि देवो भवः, 'सह-अस्तित्व' जैसे सांस्कृतिक बिंब केवल शब्द नहीं, बल्कि विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़े हुए अर्थ-संकेत हैं।AI इन शब्दों का अनुवाद या उपयोग तो कर सकता है, परंतु उनके सांस्कृतिक गूढ़ार्थ और भाव-संवेदना को उसी गहराई से व्यक्त करना उसके लिए कठिन है।ऐसी स्थिति में साहित्यकार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। साहित्यकार न केवल भाषा का सर्जक होता है, बल्कि उसका संरक्षक भी होता है। इस संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन महत्वपूर्ण है , "भाषा किसी जाति की संस्कृति का सबसे सशक्त और विश्वसनीय आधार है; उसमें उस समाज का समूचा इतिहास और मनोवृत्ति सुरक्षित रहती है।" 5

AI के युग में साहित्यकार की भूमिका समाप्त नहीं होगी, बल्कि और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। AI केवल एक साधन है, साध्य नहीं। साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदना में निहित है, जिसे कोई मशीन पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। AI के तीव्र विकास ने यह प्रश्न अवश्य खड़ा किया है कि जब मशीनें कविता,

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com
Email: raavipublications@gmail.com
WhatsApp: 9665841996

ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026
RAAVI
An International Journal of Multidisciplinary Research

कहानी, निबंध और आलोचना तक लिख सकती हैं, तो क्या साहित्यकार की आवश्यकता शेष रहेगी? किंतु गहराई से विचार करने पर स्पष्ट होता है कि साहित्यकार की भूमिका समाप्त नहीं होती, बल्कि नई परिस्थितियों में और अधिक प्रासंगिक हो जाती है।AI एक तकनीकी उपकरण है, जिसका उद्देश्य मानव कार्यों को सरल, तीव्र और व्यवस्थित बनाना है। वह सूचना को संसाधित कर सकता है, भाषा के पैटर्न पहचान सकता है और शैली का अनुकरण कर सकता है। परंतु साहित्य का 'साध्य' केवल भाषिक संरचना नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है।

जब हम कहते हैं कि AI "साधन" है और साहित्य "साध्य, तो इसका अर्थ है कि तकनीक प्रक्रिया को सुगम बना सकती है, पर उद्देश्य और मूल्य का निर्धारण मानव ही करेगा। साहित्यकार ही यह तय करता है कि किस पीड़ा को स्वर देना है, किस अन्याय पर प्रश्न उठाना है और किस मानवीय मूल्य को प्रतिष्ठित करना है।भविष्य का साहित्य मानव और मशीन के सहयोग का परिणाम हो सकता है, किंतु उसकी दिशा और मूल्य निर्धारण का कार्य साहित्यकार ही करेगा। अतः साहित्यकार को तकनीक से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे साधन के रूप में अपनाकर अपनी सृजनात्मकता को और समृद्ध करना चाहिए।

साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी है। इतिहास साक्षी है कि साहित्य ने सामाजिक परिवर्तन, स्वतंत्रता आंदोलनों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

AI में नैतिक चेतना का अभाव है; वह दिए गए निर्देशों के अनुसार कार्य करता है। साहित्यकार, इसके विपरीत, अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करता है, प्रश्न उठाता है और नैतिक दृष्टि विकसित करता है। अतः AI के युग में साहित्यकार की भूमिका एक नैतिक प्रहरी की भी हो जाती है। इस संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर का कथन हैं, "साहित्यकार युग की आत्मा का प्रतिनिधि होता है।" इस प्रकार AI युग की तकनीकी शक्ति का प्रतीक हो सकता है, किंतु 'युग की आत्मा' का प्रतिनिधित्व साहित्यकार ही करता है। नैतिक चेतना और सामाजिक संवेदनशीलता मानव में ही संभव है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि,AI के युग में साहित्यकार की भूमिका समाप्त नहीं होती, बल्कि और अधिक उत्तरदायी हो जाती है। उसे तकनीक को साधन के रूप में स्वीकार करते हुए उसकी सीमाओं को पहचानना होगा। उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि साहित्य केवल तात्कालिक सूचना या मनोरंजन तक सीमित न रहे, बल्कि वह मानव जीवन के गहरे प्रश्नों–न्याय, समानता, करुणा, अस्मिता और स्वतंत्रता–से संवाद करता रहे।

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com
Email: raavipublications@gmail.com
WhatsApp: 9665841996

ISSN:3108-253X
Special Issue : February,2026
RAAVI
An International Journal of Multidisciplinary Research

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भविष्य का साहित्य संभवतः मानव और मशीन के सहयोग से निर्मित होगा, परंतु उसकी दिशा, मूल्य और आत्मा का निर्धारण मानव साहित्यकार ही करेगा। साहित्य की स्थायित्व-शक्ति तकनीक में नहीं, बल्कि मानवीय चेतना में निहित है। इसलिए AI के युग में साहित्यकार का अस्तित्व संकट में नहीं, बल्कि एक नई सृजनात्मक जिम्मेदारी के साथ और अधिक सशक्त रूप में स्थापित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) साहित्यकार के सिद्धांत: नामवर सिंह, पृ.48
2) हिंदी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ.19
3) आलोचना के बहाने: नामवर सिंह, पृ.63
4) हिंदी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ23
5) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी: भाषा और संस्कृति संबंधी निबंध, राजकमल प्रकाशन, पृ. 53
6) संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, पृ. 22

❑❑❑

Relish Publications,
Amrapali Apartment, Canal
Road, Baramati (MS), India.
Pin code- 413102

Website: www.relishpublications.com
Email: raavipublications@gmail.com
WhatsApp: 9665841996